दीन सियासी निज़ाम की हैसियत मै

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

{1} बुखारी की रिवायत का खुलासा

हज़रत खब्बाब बिन अरत (रदी) फरमाते है की रसूलुल्लाहﷺ काबा के साए मै चादर सरके नीचे रख कर लेटे हुए थे (उस ज़माने मै मक्का वाले बहुत ज्यादा जुल्म व सितम मुसलमानों पर तोड रहे थे) हमने आपﷺ से कहा की आप हमारे लिए अल्लाह की मदद नहीं माँगते? (आखिर ये सिलसिला कब तक चलता रहेगा? आप इस जुल्म के खत्म होने की दुआ नहीं करते, कब ये मुसीबतें खत्म होंगी?) रसूलुल्लाहﷺ ने ये सुनकर फरमाया- तुमसे पहले ऐसे लोग गुज़रे है की उन्मे से किसी के लिए गढा खोदा जाता, फिर उसे उस गढे मै खडा किया जाता, फिर आरा लाया जाता और उस्से उस्के बदन को चीरा जाता, यहां तककि उस्के दो टुकडे हो जाते, फिर भी

वो दीन से ना फिरता, और उस्के बदन मै लोहे के कंघे चुभोये जाते जो गोश्त से गुज़र कर हड्डियों और पट्ठों तक पहुंच जाते मगर वो अल्लाह का बन्दा हकसे ना फिरता, कसम है अल्लाह की ये दीन गालिब होकर रहेगा, यहां तक की सवार सनआ (यमन) से हजर ए मौत तक सफर करेगा और रास्ते मै अल्लाह के सिवा उसे किसी का डर ना होगा, हां चरवाहे को सिर्फ भेडियों का डर रहेगा की कहीं बकरी उठा ना ले जाए लेकिन अफसोस तुम लोग जल्दी करते हो. मतलब यमन से लेकर बहरैन व हजर ए मौत तकके वसीअ इलाका मै हकके दुश्मनों का ज़ोर टूट जाएगा और अल्लाह के बन्दे आज़ादी से अल्लाह की बन्दगी की राह पर चलेंगे. हज़रत खब्बाब (रदी) ने मक्का की तेरह साल की ज़िन्दगी की तारीख बडी जामिईय्यत के साथ इस हदीस मै पेश फरमाई और आपﷺ ने साफ शब्दों मै उन्हें बताया की सबर से काम लो, वो वकत आने वाला है जब सियासी ताकत इस्लाम के हाथ मै आ-जाएगी, और अल्लाह की बन्दगी करने वाले हर तरह के डर और खतरे से महफूज़ हो जाएंगे.

{2} बुखारी की रिवायत का खुलासा

हज़रत अता बिन रबाह (रदी) फरमाते है की मै हज़रत उबैद लैसी के साथ हज़रत आयशा (रदी) की मुलाकात को गया, हमने उन्से हिजरत के बारे मै पूछा की हिजरत अब भी फर्ज़ है? (क्या लोग अपने अपने इलाके को छोड कर आज भी मदीना आए?) हज़रत आयशा (रदी) ने जवाब दिया की नहीं अब हिजरत नहीं होगी, हुक्म मंसूख (खत्म) हो गया, हिजरत तो इस वजह से होती थी की मोमिन की ज़िन्दगी ईमान लाने के जुर्म मै दूभर कर दी जाती थी, तब वो अपना दीन व ईमान लेकर अल्लाह और रसूल के पास चला आता, अब तो अल्लाह ने दीन को गालिब कर दिया आज मोमिन जहा चाहे आजादी से अल्लाह की बन्दगी कर सकता है, फिर वो हिजरत क्यों करे? हां जिहाद और जिहाद की निय्यत बाकी है.

बाइकतिदार और गालिब दीन जिस्के बारे मै हज़रत आयशा (रदी) उपर की हदीस मै बातचीत कर रही है आपﷺ की वफात के बाद उस्की इजतिमाईयत और इकतिदार को खतरा पहुंचने वाला था लेकिन हज़रत अबू बकर सिद्दीक (रदी) ने बचा लिया, आपﷺ की वफात से लोगों को बडा दुख हुआ

और लोग मायूस होने लगे ऐसा लगता था की इस्लाम का ये इजतिमाई निज़ाम टूट फूट ना जाए इस खतरा को हज़रत अबू बकर सिद्दीक (रदी) ने भांप लिया और एक लम्बी तकरीर की जिस्मे फरमाया-- ऐ लोगो जो शख्स हज़रत मुहम्मदﷺ को माबूद बनाए हुए था, उस्को मालूम होना चाहिए की हज़रत मुहम्मदﷺ की मौत हो गई और जो लोग अल्लाह की इबादत करते थे उन्हें समझ लेना चाहिए की वो जिन्दा है, नहीं मरेगा. और अल्लाह तआला अपने दीन की हिफाज़त का हुक्म तुम्हें दे चुका है, तो बेसबरी और घबराहट की वजह से उस दीन की हिफाज़त करना ना भूल बैठो और अल्लाह ने आपﷺ को तुम्हारे बीच से उठाकर अपने पास बुलाना पसन्द किया जहा उन्हें उन्के कामों का बदला देगा. और तुम्हारे बीच अल्लाह ने अपनी किताब और अपने रसूल की सुन्नत छोडी तो जो शख्स उन दोनों पर अमल करेगा वो भलाई की राह पाएगा और जो उन दोनों के बीच फर्क करेगा वो बुरी राह अपनाएगा अल्लाह तआला ने तुम्को खिताब करके फरमाया- था “ऐ ईमान वालो! हमारे उतारे हुए निज़ाम ए किस्त के मुहाफिज़ रहना” और ऐसा हर्गिज ना हो की शैतान तुम्हारे नबी की मौत मै

तुम्को फंसाए रखे. तो शैतान के मुकाबले मै जल्द से जल्द कोई ऐसा उपाय करो के उसे शकिस्त (पराजित) दे दो, उसे अपना काम करने की मुहलत ना दो, वर्ना तुम पर टूट पडेगा और तुम्हारे दीनी निज़ाम को बरबाद करके रख देगा.

हज़रत अबू बकर सिद्दीक (रदी) की इस तकरीर से अच्छी तरह वाज़ेह होता है की दीन का जो निज़ाम आपﷺ की ज़िन्दगी मै कायम हुआ था, उस्की क्या अहमियत है, हुज़ूर की मौत के दुख से लोग तौहीद और नमाज़ वगैरा छोडने का इरादा नहीं कर रहे थे की उन्हें समझाने की ज़रूरत पडी थी, बल्कि ये खतरा पैदा हो गया था की इस्लाम का निजाम ए हुकूमत जो इतनी मेहनत के बाद कायम हुआ था टूट फूट जाएगा. इसलिए हज़रत सिद्दीक (रदी) आगे बढे, सहाबा के मजमा (सभा) मै तकरीर फरमाई जिस्मे सूरह निसा की आयत “या अय्युहल्लजीना आमनू कुनू कव्वामीना बिलकिस्ति” का हवाला देकर बताया अल्लाह तआला ने तुम्हें निजाम ए किस्त का मुहाफिज़ बनाया है उस्की हिफाज़त का तुमसे अहद लिया है तो मृत्यु के गम को हद से ना बढने दो, उठो और शैतान को हराओ, अपने दीनी निज़ाम (पर्तिनिधि)

को कायम रखने की बातें सोचो.

हज़रत अबू बकर (रदी) ने सूरह निसा की जिस आयत का हवाला दिया उस्से पहले अल्लाह तआला ने बताया है की तुमसे पहले बनी इसराइल को हमने अपनी अमानत सौंपी थी, लेकिन उन्हों ने खयानत और गद्दारी के नतीजे मै अल्लाह का गजब उनपर भडका, कोमों की इमामत का हक उन्से छीन लिया गया और उस वकत के शिर्क करने वालों की महकूमी उन्के हिस्से मै आई, अब तुम्को उन्की जगह दी जा रही है, तुम्हें किताब ए हिकमत और बडी हुकूमत से नवाज़ा जा रहा है, खबरदार बनी इसराइल की तरह खयानत और बेवफाई ना करना, हमने जिन्हें तौरात दी थी, उन्हें वसिय्यत की थी की नाफरमानी ना करना, वादे पर कायम रहना किताब से बेवफाई ना करना, लेकिन उन्हों ने नाशुक्री, गद्दारी और बेवफाई की राह इख्तियार की जिस्की वजह से उन्हें बुरे नतीजे भुगतने पडे, और अब तुम्हें (ऐ उम्मत ए मुहमदिय्या) वसिय्यत करते है की तकवा की राह पर चलना, वादा ना तोडना, कुरआन की राह छोड कर हमारे गज़ब को दावत ना देना और उस्के बाद ये हिदायत दी की ऐ ईमान वालो! न्याय

व इन्साफ के इस इलाही निज़ाम की हर कीमत पर हिफाज़त करना.

यही विषय शब्दों के थोडे से फर्क के साथ सूरह मायदा मै भी दोहराया गया है सूरह मायदा आखिरी अहकामी सूरह है जिस्मे कानून को पूरा कर दिया गया है, इस्के बाद कोई अहकामी सूरह नहीं उतरी. ये सूरह अरफात मै उतरी इस्का अन्दाजे बयान ऐसा है जैसे की आखिरी बार उम्मत से इस मैदान मै अहद (वादा) लिया जा रहा है की देखो नेअमत को पूरा कर दिया गया है, एक बडी हुकूमत तुम्हारे हवाले की जा चुकी है अब तुम्हारा फर्ज़ है की हमारे अहद पर कायम रहना, वर्ना याद रखो बनी इसराइल की तारीख तुम्हारे सामने है, उन्हों ने अहद को तोडा तो कैसे ज़लील व अपमानित हुए. ये है दीनी निज़ाम और उस्की कदर व कीमत और अहमियत, पर अफसोस की उम्मत ए मुस्लिमा ने इस निज़ाम को खो दिया और रोना इस बात का की ये उम्मत आराम की नींद सो रही है.

वाए नाकामी मता ए कारवाँ जाता रहा

कारवाँ के दिल से एहसास ए ज़ियाँ जाता रहा.